॥ दोहा ॥

जय ब्रह्मा जय स्वयम्भू, चतुरानन सुखमूल।
करहु कृपा निज दास पै, रहहु सदा अनुकूल।

तुम सृजक ब्रह्माण्ड के, अज विधि घाता नाम।
विश्वविधाता कीजिये, जन पै कृपा ललाम।

॥ चौपाई ॥

जय जय कमलासान जगमूला, रहहू सदा जनपै अनुकूला।
रुप चतुर्भुज परम सुहावन, तुम्हें अहैं चतुर्दिक आनन। 1 ।

रक्तवर्ण तव सुभग शरीरा, मस्तक जटाजुट गंभीरा।
ताके ऊपर मुकुट विराजै, दाढ़ी श्वेत महाछवि छाजै। 2 ।

श्वेतवस्त्र धारे तुम सुन्दर, है यज्ञोपवीत अति मनहर।
कानन कुण्डल सुभग विराजहिं, गल मोतिन की माला राजहिं। 3 ।

चारिहु वेद तुम्हीं प्रगटाये, दिव्य ज्ञान त्रिभुवनहिं सिखाये।
ब्रह्मलोक शुभ धाम तुम्हारा, अखिल भुवन महँ यश विस्तारा। 4 ।

अर्द्धांगिनि तव है सावित्री, अपर नाम हिये गायत्री।
सरस्वती तब सुता मनोहर, वीणा वादिनि सब विधि मुन्दर। 5 ।

कमलासन पर रहे विराजे, तुम हरिभक्ति साज सब साजे।
क्षीर सिन्धु सोवत सुरभूपा, नाभि कमल भो प्रगट अनूपा। 6 ।

तेहि पर तुम आसीन कृपाला, सदा करहु सन्तन प्रतिपाला।
एक बार की कथा प्रचारी, तुम कहँ मोह भयेउ मन भारी। 7 ।

कमलासन लखि कीन्ह बिचारा, और न कोउ अहै संसारा।
तब तुम कमलनाल गहि लीन्हा, अन्त विलोकन कर प्रण कीन्हा। 8 ।

कोटिक वर्ष गये यहि भांती, भ्रमत भ्रमत बीते दिन राती।
पै तुम ताकर अन्त न पाये, ह्वै निराश अतिशय दुःखियाये। 9 ।

पुनि बिचार मन महँ यह कीन्हा महापघ यह अति प्राचीन।
याको जन्म भयो को कारन, तबहीं मोहि करयो यह धारन। 10 ।

अखिल भुवन महँ कहँ कोई नाहीं, सब कुछ अहै निहित मो माहीं।
यह निश्चय करि गरब बढ़ायो, निज कहँ ब्रह्म मानि सुखपाये। 11 ।

गगन गिरा तब भई गंभीरा, ब्रह्मा वचन सुनहु धरि धीरा।

सकल सृष्टि कर स्वामी जोई, ब्रह्म अनादि अलख है सोई। 12 ।

निज इच्छा इन सब निरमाये, ब्रह्मा विष्णु महेश बनाये।
सृष्टि लागि प्रगटे त्रयदेवा, सब जग इनकी करि रहै सेवा। 13 ।

महापद्म जो तुम्हरो आसन, ता पै अहै विष्णु को शासन।
विष्णु नाभितें प्रगट्यो आई, तुम कहँ सत्य दीन्ह समुझाई। 14 ।

भैतहू जाई विष्णु हितमानी, यह कहि बन्दभई नभवानी।
ताहि श्रवण करि अचरज माना, पुनि चतुरानन कीन्ह पयाना। 15 ।

कमल नाल धरि नीचे आवा, तहां विष्णु के दर्श न पावा।
शयन करत देखे सुरभूपा, श्यामवर्ण तनु परम अनूपा। 16 ।

सोहत चतुर्भुज अतिसुन्दर, क्रीटमुकट राजत मस्तक पर।
गल बैजन्ती माल विराजै, कोटि सूर्य की शोभा लाजै। 17 ।

शंख चक्र अरु गदा मनोहर, पद्म नाग शय्या अति मनहर।
विदयरुप लखि कीन्ह प्रणामू, हर्षित भे श्रीपति सुख धामू। 18 ।

बहुविधि विनय कीन्ह चतुरानन, तब लक्ष्मीपति कहेउ मुदित मन।
ब्रह्मा दूरि करहु अभिमाना, ब्रह्म मारुप हम दोउ समाना। 19 ।

तीजे श्री शिवशंकर आहीं, ब्रह्म मरुप सब त्रिभुवन मांही ।
तुम सों होई सृष्टि विस्तारा, हम पालन करि रहैं संसारा। 20 ।

शिव संहार करिहं सब केरा, हम तीनहुं कहँ काज घनेरा।
अगुणरुप श्री ब्रह्मा बखानहु, निराकार तिनकहँ तुम जानहु। 21 ।

हम साकार रुप त्रयदेवा, करि रहैं सदा ब्रह्म की सेवा।
यह सुनि ब्रह्मा परम सिहाये, परब्रह्म के यश अति गाये। 22 ।

सो सब विदित वेद के नामा, मुक्त रुप सो परम ललामा।
यहि विधि प्रभु भो जनम तुम्हारा, पुनि तुम प्रगट कीन्ह संसारा। 23 ।

नाम पितामह सुन्दर पायेउ, जड़ चेतन सब कहँ निरमायेउ।
लीन्ह अनेक बार अवतारा, सुन्दर सुयश जगत विस्तारा। 24 ।

देवदनुज सब तुम कहँ ध्यावहिं, मनवांछित तुम सन सब पावहिं।
जो कोउ ध्यान धरै नर नारी , ताकी आस पुजावहु सारी । 25 ।

पुष्कर तीर्थ परम सुखदाई, तहँ तुम बसहु सदा सुरराई।
कुण्ड नहाइ करिह जो पूजन, ता कर दूर होई सब दूषण। 26 ।